

पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का अध्ययन

नवीना जैन*

डॉ.मीना कालरा**

*शोधार्थी, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर

**शोध मार्गदर्शिका, विद्याभवन गांधी शिक्षा संस्थान रामगिरी, उदयपुर

Email - navijain22589@gmail.com

सारांश: प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले एवं भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु उदयपुर जिले के 14 उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 400 सरकारी तथा 400 गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी शामिल थे। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि तथा नैतिक निर्णय मापनी का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का मध्यमान **8.18** तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों का **7.00** था और प्राप्त **t-मान 8.26** सार्थक पाया गया। जबकि गैर-सरकारी विद्यालयों में दोनों समूहों के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर सार्थक नहीं पाया गया (**t = 1.07**)। अध्ययन से निष्कर्षित हुआ कि विशेष रूप से सरकारी विद्यालयों में पाठ्यसहगामी क्रियाओं में सहभागिता विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाती है। अतः विद्यालयों में पाठ्यसहगामी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।

मुख्य शब्द : पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, नैतिक निर्णय, विद्यार्थी, सरकारी विद्यालय, गैर-सरकारी विद्यालय, नैतिक विकास, सहभागिता।

1. प्रस्तावना :

पाठ्यसहगामी क्रियाओं द्वारा बालक में अनेक गुणों तथा अनुशासन, धैर्य, संयम, नियमितता, स्वच्छता, शिक्षकों के प्रति आदर की भावना, विद्यालय एवं राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति सुरक्षा एवं समाज सेवा की भावना, साथियों के प्रति कल्याण की भावना, श्रमशीलता एवं सहयोग की भावना आदि गुणों का विकास होता है। पाठ्यसहगामी क्रियाओं को विद्यालयी जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना गया है।

छात्रों के नैतिक निर्णय पर भी पाठ्यसहगामी क्रियाएँ सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। पाठ्यसहगामी क्रियाएँ छात्र की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास के लिए आवश्यक हैं। छात्र इनसे सहिष्णु, साहसी, सदाचारी, कर्मठ व धैर्यवान बनता है क्योंकि पाठ्यसहगामी क्रियाओं से छात्र के सभी व्यक्तित्व पक्षों का सम्पूर्ण विकास होता है। इसी कारण पाठ्यसहगामी क्रियाओं को शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना गया है।

2. अध्ययन का महत्व

पाठ्यसहगामी क्रियाओं के नैतिक निर्णय पर गहन प्रभाव पड़ता है। जब छात्र इन क्रियाओं में भाग लेता है तो उसकी आन्तरिक इच्छाओं की आनन्ददायक तथा शीघ्र अभिव्यक्ति में निखार आता है। ये गतिविधियाँ छात्र की कई आवश्यकताओं को पूरा करती हैं जैसे सुरक्षा का भाव, सहभागिता का भाव तथा खुशी का अनुभव आदि।

आधुनिक प्रजातान्त्रिक शिक्षा का ध्येय है- स्वास्थ्य का विकास, मस्तिष्क का विकास, अवकाश काल का सदुपयोग आत्मनिर्भरता नैतिक व चारित्रिक गुणों युक्त नागरिकों का विकास, देश के प्रति समर्पण की भावना आदि। यह सभी उद्देश्य पाठ्यसहगामी क्रियाओं द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। कर्तव्यनिष्ठा ही बालक में अप्रत्यक्ष रूप से उच्च जीवन चरित्र व नैतिक आदर्शों की स्थापना करने में सक्षम हो सकती है। विद्यार्थी जीवन में पाठ्यसहगामी क्रियाओं का अत्यधिक महत्व है। उसके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय है बाल्यावस्था, क्योंकि बाल्यावस्था ही भविष्य की नींव तैयार करती है। इस अवस्था में सीखे गये व्यवहार गुण, आदतें आदि आजीवन रक्षार्थ रहती है। इस अवस्था में बालक का सर्वांगीण विकास करने में पाठ्यसहगामी क्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। शरीर के समस्त अंगों का समुचित विकास हो, इस हेतु पाठ्यसहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत खेल-कूद, जिम्नैस्टिक, स्काउट, व्यायाम, पी.टी. योगासन, ऐरोबिक्स, एन.सी.सी., एन.एस.एस, वाद-विवाद, भाषणकला, चित्रकला, संगीत कला, नाट्य एवं नृत्य कला, सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधियाँ आदि आती है। ये सभी बालक के शरीर एवंमानस का व्यायाम कराते हुए उनका मजबूतीकरण करती है। शारीरिक सौष्ठवता के साथ साथ सांस्कृतिक तत्वों यथा सावेगिक परिपक्वता मानसिक स्वास्थ्य आदि को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। उनके नैतिक निर्णय के स्तर को बढ़ाने में अपना योगदान देती है। इस प्रकार पाठ्यसहगामी क्रियाएं मानसिक रूप से भी आधार प्रदान करती है।

3. अध्ययन का औचित्य

वर्तमान में विद्यार्थियों में सम्यक नैतिक निर्णय की समस्या अपने आप में विकराल है विशेष रूप से किशोर पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से उचित अनुचित का निर्णय करने में दिग्भ्रमित स्थिति में है जबकि यह सुविदित है कि वास्तव में नैतिकता ही धर्म का व्यावहारिक स्वरूप है। यदि व्यक्ति में सही गलत की पहचान, आचार-विचार का ख्याल, करणीय व अकरणीय कर्म एवं स्वीकृत आदर्शों पर उचित निर्णय लेने की क्षमता का ज्ञान हो एवं तदनुसार वह धर्म सम्मत मार्ग का अनुसरण करे या ठीक प्रकार से उचित-अनुचित का निर्णय करे तो स्वाभाविक रूप से उसमें नैतिक निर्णय करने की क्षमता का विकास होता जाता है। पाठ्यसहगामी क्रियाओं से होने वाले लाभों व प्रभावों को दृष्टिगत रखते हुए तथा इन क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों व भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय को देखते हुए शोधकर्ता के विचार से इस विषय का अध्ययन विशेष औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है।

4. समस्या कथन- पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का अध्ययन।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी विद्यालयों के पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का अध्ययन करना।
2. गैर-सरकारी विद्यालयों के पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का अध्ययन करना।

6. अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. सरकारी विद्यालयों के पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. गैर-सरकारी विद्यालयों के पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

7. परिसीमन

प्रस्तुत शोधकार्य का राजस्थान राज्य के उदयपुर जिले तक सीमित रखा गया है। प्रस्तुत शोध में उदयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 14 विद्यालय जिनमें 7 (सात) सरकारी व 7 (सात) गैर-सरकारी विद्यालयों के पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

8. न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य का न्यादर्श के लिए 400 राजकीय विद्यार्थियों तथा 400 गैर-सरकारी विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। प्रस्तुत शोध के लिए 14 विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया जिसमें से सात-सात विद्यालय राजकीय व गैर-सरकारी विद्यालय है।

9. शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

नैतिक निर्णय मापनी

डॉ. मीरा वर्मा एवं प्रो. दुर्गानन्द सिन्हा द्वारा निर्मित नैतिक निर्णय मापनी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (d), प्रमाणिक विचलन (sd.) एवं t-test (टी-परीक्षण) की गणना की जायेगी।

समकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आँकड़ों का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या-1

सरकारी विद्यालयों की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले एवं भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय के फलों के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-मूल्य (t-value)	सार्थकता स्तर
भाग लेने वाले	200	8.18	1.33	8.26	0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर सार्थक अन्तर
भाग न लेने वाले	200	7.00	1.52	—	—

स्वतंत्रता की कोटि (df):

$$df = N_1 + N_2 - 2 = 200 + 200 - 2 = 398$$

व्याख्या:

सारणी से स्पष्ट होता है कि पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या 200 थी, जिनके नैतिक निर्णय का मध्यमान 8.18 तथा मानक विचलन 1.33 था। दूसरी ओर, पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी 200 थी, जिनके नैतिक निर्णय का मध्यमान 7.00 तथा मानक विचलन 1.52 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर 1.18 था। प्राप्त टी-मूल्य 8.26 है, जो 398 स्वतंत्रता की कोटि पर 0.05 तथा 0.01 दोनों सार्थकता स्तरों पर सार्थक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले एवं भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय के फलों में सार्थक अन्तर पाया गया।

दोनों समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए स्वतंत्र नमूनों पर ज-परीक्षण का उपयोग किया गया। गणना के अनुसार ज-मूल्य 8.26 प्राप्त हुआ। 398 स्वतंत्रता डिग्री पर 0.05 स्तर के लिए सारणी टी-मूल्य 1.96 तथा 0.01 स्तर के लिए 2.58 है। चूँकि प्राप्त टी-मूल्य 8.26 इन दोनों सारणी मूल्यों से अधिक है, इसलिए यह अंतर 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

सारणी संख्या-2

गैर-सरकारी विद्यालयों की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले एवं भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय के फलों के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-मूल्य (t-value)	सार्थकता स्तर
भाग लेने वाले	200	7.06	1.99	1.07	सार्थक अन्तर नहीं है
भाग न लेने वाले	200	6.82	2.46	—	—

स्वतंत्रता की कोटि (df):

$$df = N_1 + N_2 - 2 = 200 + 200 - 2 = 398$$

व्याख्या:

तालिका से स्पष्ट होता है कि गैर-सरकारी विद्यालयों में पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या 200 थी, जिनके नैतिक निर्णय का मध्यमान **7.06** तथा मानक विचलन **1.99** पाया गया। दूसरी ओर, पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी 200 थी, जिनके नैतिक निर्णय का मध्यमान **6.82** तथा मानक विचलन **2.46** प्राप्त हुआ।

दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु स्वतंत्र नमूनों पर **t-परीक्षण** का प्रयोग किया गया। गणना के अनुसार **t-मूल्य 1.07** प्राप्त हुआ। **398 स्वतंत्रता की कोटि (df)** पर 0.05 स्तर के लिए सारणीबद्ध t-मूल्य **1.96** तथा 0.01 स्तर के लिए **2.58** है। चूँकि प्राप्त t-मूल्य **1.07**, दोनों सारणीबद्ध t-मूल्यों से कम है, इसलिए दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य पाया गया अन्तर सांख्यिकीय रूप से **सार्थक नहीं है**। अतः **शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है**।

10. प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

पाठ्यसहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के अवकाश के समय के सदुपयोग का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ये क्रियाएँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के विकास में सहायक होती हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थियों में शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिकता, सहयोग एवं सहभागिता की भावना का भी विकास होता है।

वर्तमान समय में भौतिकतावादी जीवनशैली, तीव्र औद्योगीकरण, पाश्चात्यकरण तथा बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण विद्यार्थियों में तनाव, निराशा एवं हताशा जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में पाठ्यसहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन क्रियाओं में नियमित सहभागिता से विद्यार्थियों में धैर्य, नेतृत्व, निर्णय-क्षमता एवं अनुशासन जैसे महत्वपूर्ण गुणों का विकास होता है।

विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययनों से भी यह स्पष्ट हुआ है कि व्यायाम, योग तथा अन्य शारीरिक गतिविधियों को जीवन का हिस्सा बनाने वाले विद्यार्थी शारीरिक एवं मानसिक रूप से अधिक सक्रिय रहते हैं तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम होते हैं। पाठ्यसहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, उपलब्धि की भावना तथा जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा को विकसित करती हैं। इसके परिणामस्वरूप उनमें समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित होती है तथा वे राष्ट्र के विकास में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित होते हैं।

इस प्रकार, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ केवल विद्यार्थियों के अवकाश के समय के सदुपयोग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास को समग्र रूप से प्रभावित करती हैं। अतः विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालयी शिक्षा में पाठ्यसहगामी क्रियाओं को उचित महत्व एवं पर्याप्त अवसर प्रदान किया जाना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. बंडूरा, ए. (1977). *सोशल लर्निंग थ्योरी*। प्रेंटिस-हॉल।
2. ब्लासी, ए. (1980). नैतिक निर्णय और नैतिक कार्य के बीच संबंध: नैतिक आत्म और आत्म-संगति का मॉडल। *मनोवैज्ञानिक बुलेटिन*, 87(2), 224-240।
3. बर्कोविट्ज़, एम. डब्ल्यू., एवं बिअर, एम. सी. (2004). शोध-आधारित चरित्र शिक्षा। *द एनल्स ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ पॉलिटिकल एंड सोशल साइंस*, 591(1), 72-85।
4. ब्रोनफेनब्रेनर, यू. (1979). *द इकोलॉजी ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट: एक्सपेरिमेंट्स बाय नेचर एंड डिजाइन*। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. ड्यूई, जे. (1916). *डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन: एन इंट्रोडक्शन टू द फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन*। मैकमिलन।
6. एक्लेस, जे. एस., एवं टेम्पलटन, जे. (2002). सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी और सकारात्मक युवा विकास। *कंटेम्परेरी एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 27(1), 1-22।
7. फ्रेडरिक्स, जे. ए., ब्लूमेनफेल्ड, पी. सी., एवं पेरिस, ए. एच. (2004). स्कूल सहभागिता: संभावित अवधारणा, स्थिति और अनुसंधान दिशा। *रिव्यू ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 74(1), 59-109।
8. कोहलबर्ग, एल. (1969). नैतिक विकास और नैतिक शिक्षा। *नैतिक विकास के सिद्धांत और शोध*, 1, 347-480।
9. लार्सन, आर. डब्ल्यू. (2000). किशोरावस्था में सकारात्मक विकास के लिए सार्थक गतिविधियाँ। *द जर्नल ऑफ रिसर्च ऑन एडोलसेंस*, 10(1), 1-21।
10. लिक्कोना, टी. (1991). *एजुकेटिंग फॉर कैरेक्टर: हाउ अवर स्कूल्स कैन टीच रिसपेक्ट एंड रिसपॉन्सिबिलिटी*। बैटम बुक्स।
11. महोनी, जे. एल., लार्सन, आर. डब्ल्यू., एवं एक्लेस, जे. एस. (सं.). (2005). *ऑर्गनाइज्ड एक्टिविटीज़ ऐज़ कान्टेक्स्ट्स ऑफ डेवलपमेंट: एक्स्ट्राक्युरिकुलर एक्टिविटीज़, आफ्टर-स्कूल एंड कम्युनिटी प्रोग्राम्स*। लॉरेंस एर्लबाम एसोसिएट्स।
12. नरवेज़, डी., एवं बेंसन, जे. जी. (2010). नैतिक शिक्षा: नैतिक विकास और नैतिक चरित्र का विकास। *जर्नल ऑफ मॉरल एजुकेशन*, 39(2), 129-135।
13. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*। एनसीईआरटी।
14. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2021). *स्कूलों में कला-समेकित शिक्षा: मार्गदर्शिका*। एनसीईआरटी।
15. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2023). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा: स्कूल शिक्षा के लिए*। एनसीईआरटी।
16. पार्क, एन. (2004). चरित्र निर्माण और नैतिक विकास के लिए चरित्र शक्ति और सकारात्मक युवा विकास। *द एनल्स ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ पॉलिटिकल एंड सोशल साइंस*, 591(1), 40-54।
17. पियाजे, जे. (1965). *द चाइल्ड्स मॉरल जजमेंट*। द फ्री प्रेस।
18. रेस्ट, जे. आर. (1986). *मोरल डेवलपमेंट: एडवांस इन रिसर्च एंड थ्योरी*। प्राएगर।
19. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। शिक्षा मंत्रालय।
20. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग. (2019). *मूल्य-आधारित शिक्षा पर दिशा-निर्देश*। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
21. अग्रवाल, आर. एन. (1993). *व्यक्तित्व: प्रकृति एवं मापन*। विनोद पुस्तक मंदिर।
22. अस्थाना, विपिन. (1999). *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन*। विनोद पुस्तक मंदिर।
23. बघेला, हेतसिंह, एवं व्यास, हरिश्चन्द्र. (वर्ष अज्ञात). *शाला संगठन एवं शिक्षा की समस्याएँ*।
24. भटनागर, सुरेश. (1996). *शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएँ*। सूर्या पब्लिकेशन।
25. भटनागर, सुरेश. (2007). *शिक्षा मनोविज्ञान*। आर. लाल बुक डिपो।
26. भुजंगराव, टी. एस. (1991). *विद्यालय दर्पण*। सविता प्रकाशन।
27. भुजंगराव, टी. एस. (1992). *विद्यालय दर्पण*। सविता प्रकाशन।